गीता का निराकार भगवान शिव-शंकर भोलेनाथ या साकार श्रीकृष्ण की आत्मा उर्फ दादा लेखराज?

भारतीयों के लिए ढाई हज़ार साल से जीवन के हर क्षेत्र में मार्गदर्शक का कार्य करने वाली गीता सर्व शास्त्र शिरोमणि है, इस बात में कोई संदेह नहीं है, किंतु भारत के इतिहास में इसी गीता पर जितने विद्वानों और आचार्यों ने टीकाएँ लिखी हैं, उतनी शास्त्र पर नहीं लिखी गई होंगी, जो यह सिद्ध करता है कि यह शास्त्र ऐसा अनूठा है कि मनुष्यों द्वारा विभिन्न प्रकार से की गई इसकी व्याख्या ने सारे मनुष्यों को कभी संतुष्ट नहीं किया है। किसी ने सच ही कहा है "कै जाने कवि या कै जाने रवि।" किसी कविता की सही व्याख्या उसका रचनाकार अर्थात् कवि ही कर सकता है अथवा ज्ञानसूर्य रवि कर सकता है। बाकी जितने भी मनुष्य उस कविता की जितनी भी व्याख्याएँ करें, वो किसी न किसी दृष्टिकोण से अधूरी ही होगी।

जन सामान्य के मन में तो यही बात बैठा दी गई है कि गीता के ज्ञानदाता श्रीकृष्ण थे, जिन्होंने द्वापरयुग में कुरूक्षेत्र की रणभूमि में रथ पर विराजमान होकर अर्जुन को गीता का उपदेश दिया था, किंतु आध्यात्मिक और ऐतिहासिक दृष्टिकोण से देखें, तो गीता किसने, किसको, कब, कहाँ और कैसे सुनाई थी–ये सारे ही प्रश्न विवादास्पद हैं।

सर्वप्रथम प्रश्न तो यही उठता है कि गीता किसने और किसको सुनाई थी? गीता और सत्यनारायण की कथा यह सिद्ध करती है कि भगवान तो साधारण, बूढ़े और अनुभवी मनुष्य के रूप में प्रकट होते हैं। गीता में ही लिखा हुआ है -

- अवजानन्ति मां मूढा मानुषीं तनुमाश्रितम्।
  परं भावमजानन्तो मम भूतमहेश्वरम्॥ 11 ॥ (अध्याय-9)

साथ ही, गीता में लिखा हुआ है कि ईश्वर तो अजन्मा, अभोक्ता और अव्यक्त है।

- अजोऽपि सन्नव्ययात्मा भूतानामीश्वरोऽपि सन्।
  प्रकृतिं स्वामधिष्ठाय सम्भवाम्यात्ममायया॥ 6 ॥ (अध्याय-4)
- यो मामजमनादिं च वेत्ति लोकमहेश्वरम्।
  असंमूढ: स मर्त्येषु सर्वपापै: प्रमुच्यते॥ 3 ॥ (अध्याय-10)

श्रीमद्भगवद्गीता में उसी आदि-अनादि पुरुष की स्तुति की गई है–(तमेव चाद्यं पुरुषं प्रपद्ये यत: प्रवृत्ति: प्रसृता पुराणी॥ 4 ॥ अध्याय-15) अर्थात् 'मैं उस आदि-अनादि पुरुष को प्रणाम करता हूँ, जिससे इस संसार-वृक्ष की आदि प्रवृत्ति हुई है।' गीता का वह आदि पुरुष स्वयं बता रहा है–(अहमादिर्हि देवानां महर्षीणां च सर्वश:॥ 2 ॥ अध्याय-10) अर्थात् 'मैं ही देवों और महर्षियों, सबका आदि हूँ।' उसी ने प्राचीनकाल में कर्मयोग की वह प्रसिद्ध निष्ठा प्रचलित की थी, जिसके कारण भारत को जैन परम्परानुसार भी कर्मभूमि की संज्ञा मिली है। (निष्ठा पुरा प्रोक्ता मयानघ.....कर्मयोगेन योगिनाम्॥ 3 ॥ अध्याय-3) यहाँ ध्यान रहे कि गीता का ज्ञान श्रीकृष्ण ने नहीं दिया था; अपितु उसी आदि-अनादि पुरुष ने गृहस्थ धर्म की शिक्षा के लिए गृहस्थ अर्जुन को सहज राजयोग सिखाने हेतु दिया था। इस बारे में अधिक विस्तार में न जाकर प्रकरणवश कुछ प्रसिद्ध इतिहासकारों के उद्धरण प्रस्तुत करते हैं–

होपकिन्स का विचार है–"(गीता का) अब जो कृष्णप्रधान रूप मिलता है, वह पहले कोई विष्णुप्रधान कविता थी और इससे भी पहले वह कोई एक निस्सम्प्रदाय रचना थी।" रिलीजन्स ऑफ इण्डिया (राधाकृष्णन गीता), रिलीजियस लिटरेचर ऑफ इण्डिया(1620) पृष्ठ-12-14 पर फर्कुहार ने लिखा है–"यह (गीता) एक पुरानी पद्य उपनिषद है, जो सम्भवत: श्वेताश्वतरोपनिषद के बाद लिखी गई है और जिसे किसी कवि ने कृष्णवाद के समर्थन के लिए ई0 सन् के बाद वर्तमान रूप में ढाल दिया है।" गर्वे के अनुसार, "भगवद्गीता पहले एक सांख्य-योग सम्बन्धी ग्रंथ था, जिसमें बाद में कृष्णवासुदेव पूजा पद्धति आ मिली और ई0 पूर्व तीसरी शताब्दी में इसका मेलमिलाप कृष्ण को विष्णु का रूप मानकर वैदिक परम्परा के साथ बिठा दिया गया। मूल रचना ईस्वी पूर्व 200 में लिखी गई थी और इसका वर्तमान रूप ईसा की दूसरी शताब्दी में किसी वेदान्त के अनुयायी द्वारा तैयार किया गया है।" होल्ट्ज़मैन गीता को सर्वेश्वरवादी कविता का बाद में विष्णुप्रधान बनाया गया रूप मानता है। कीथ का भी विश्वास है कि मूलत: गीता श्वेताश्वतर के ढंग की उपनिषद थी; परन्तु बाद में उसे कृष्णा पूजा के अनुकूल ढाल दिया गया। (राधाकृष्णन 'गीता' की भूमिका, पृष्ठ-17 से उद्धृत)

जबकि श्रीकृष्ण का तो माँ के गर्भ से जन्म हुआ था, उन्होंने जीवन के सभी सुखों का भोग किया, गुरू संदीपनी से शिक्षा प्राप्त की। उन्हें अधिकतर बाल्यावस्था में ही दिखाया गया है; इसलिए सारा संसार उन्हें अपने पिता के रूप में स्वीकार नहीं कर सकता। दूसरी बात, पौराणिक कथाओं में प्रसिद्ध है कि द्वापरयुग में गीता श्रीकृष्ण ने केवल अर्जुन को एक रथ पर विराजमान होकर सुनाई, किंतु यह भी प्रसिद्ध है कि महर्षि व्यास ने महाभारत शास्त्र की रचना की, जो कि जन-जन तक संस्कृत में पहुँची। ऐतिहासिक दृष्टि से ये तथ्य विवादास्पद हैं।

- अब गीता को जन्म किसने दिया है, यह है टॉपिक। जयन्ती कहते हैं तो ज़रूर जन्म भी हुआ ना। उनको जब कहते हैं, श्रीमद् भगवत गीता जयन्ती तो ज़रूर उनको जन्म देने वाला भी चाहिए ना। सब कहते हैं, श्रीकृष्ण भगवानुवाच। तो फिर श्रीकृष्ण पहले आता, गीता पीछे हो जाती। अब गीता का रचयिता ज़रूर चाहिए। अगर श्रीकृष्ण को कहते तो पहले श्रीकृष्ण, गीता पीछे आनी चाहिए; परन्तु श्रीकृष्ण तो छोटा बच्चा था वह गीता सुना ना सके। यह सिद्ध करना करना होगा कि गीता को जन्म देने वाला कौन? यह है गुह्य बात। भारत में कुछ रोला है सो इसी बात पर है। कृष्ण तो जन्म लेता है माता के गर्भ से। वह तो सतयुग का प्रिन्स है। (मु.24.11.88 पृ.1 आ.)

वास्तव में, गीता है तो सर्व शास्त्र शिरोमणि, किंतु वह द्वापरयुग में नहीं, अपितु 5000 वर्ष के चतुर्युगी मनुष्य सृष्टि रूपी चक्र में कलियुग के अंत और सतयुग की आदि अर्थात् पुरुषोत्तम संगमयुग में सुनाई गई थी, जिसकी अभी पुनरावृत्ति हो रही है। यदि गीता द्वापरयुग में ही सुनाई गई थी तो फिर पापी कलियुग कैसे आ गया? भगवान के अवतरण के पश्चात् तो सतयुग आना चाहिए था, न कि महापापी कलियुग और गीता सुनाई जाती है संगमयुग में, जबकि सृष्टि पर सारे धर्म, धर्मावलंबी और अपने-अपने अंतिम जन्मों में उन धर्मों के धर्मपिता भी विद्यमान होते हैं। तभी तो गीता में कहा गया है–सर्व धर्मों का त्याग कर मुझ एक परमात्मा की शरण में आ जा।

सर्वधर्मान्परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज।

अहं त्वा सर्वपापेभ्यो मोक्षयिष्यामि मा शुचः॥ 66 ॥ (अध्याय-18)

हिन्दुओं के पारम्परिक दृष्टिकोण से तो जब द्वापरयुग में गीता सुनाई गई थी तब मुस्लिम, सिक्ख आदि धर्म तो नहीं थे। फिर गीता में उक्त श्लोक कैसे आ गया? और भगवान द्वारा गीता कोई संस्कृत-जैसी कठिन भाषा में नहीं सुनाई गई थी, वह तो सर्व साधारण को समझ में आने वाली भाषा, जैसे–हिन्दी, में सुनाई जा रही है। ऐतिहासिक दृष्टि से भी देखें, तो संस्कृत कभी जन साधारण की भाषा नहीं रही है। फिर सर्वसाधारण मानुषी तन में आया हुआ भगवान भला ऐसी क्लिष्ट भाषा का प्रयोग कैसे कर सकता है? साथ ही, गीता श्री कृष्ण जैसे आकर्षक रूप-रंग वाले तथा पुनर्जन्म के चक्र में आने वाले किसी साकारी राजकुमार के द्वारा नहीं, अपितु अजन्मा, अभोक्ता, निराकार भगवान शिव द्वारा कलियुग के अंत में किसी साधारण मनुष्य तन (प्रजापिता ब्रह्मा) के द्वारा केवल एक अर्जुन को नहीं, अपितु अर्जुन-जैसे कई अन्य गृहस्थियों को दिया जा रहा है। गीता में लिखा है–हे अर्जुन, तू अपने जन्मों को नहीं जानता। मैं तुझे तेरे अनेक जन्मों की कहानी सुनाता हूँ।

बहूनि मे व्यतीतानि जन्मानि तव चार्जुन।
तान्यहं वेद सर्वाणि न त्वं वेत्थ परंतप॥ 5 ॥ (अध्याय-4)

किंतु, जो कृष्ण स्वयं जन्म और मरण के चक्र में आने वाला हो, वह अन्य मनुष्यात्माओं को सच्ची मुक्ति और जीवनमुक्ति का वर्सा कैसे दे सकता है और उनके अनेक जन्मों की कहानी कैसे सुना सकता है? इससे सिद्ध होता है कि अनेक जन्मों की कहानी साकारी श्री कृष्ण द्वारा नहीं, अपितु अजन्मा परमात्मा शिव द्वारा सुनाई जाती है, जो कि गीता या अमरकथा के रूप में प्रसिद्ध है।

गीता के संबंध में उपर्युक्त मत, जो कि आम धारणा से पूर्णतया भिन्न है, ब्रह्माकुमारी संस्था के साथ-साथ कंपिला, उत्तर प्रदेश स्थित आध्यात्मिक ईश्वरीय विश्वविद्यालय का भी यही मत है कि सन् 1936-37 से प्रारंभ हुए पुरुषोत्तम संगमयुग पर निराकार भगवान शिव द्वारा अपने अति साधारण साकार मनुष्य रथ के द्वारा सुनाया गया ईश्वरीय ज्ञान, जिसे मुरली कहा जाता है, वही सच्ची गीता है, जिसके आधार पर ढाई हज़ार साल बाद प्रारंभ होने वाले द्वापरयुग में, संस्कृत की गीता लिखी जाएगी। हालाँकि ब्रह्माकुमारी संस्था यह तो मानती है कि निराकार शिव ही गीता के भगवान है, किंतु वह दादा लेखराज ब्रह्मा उर्फ कृष्ण की आत्मा को ही संसार भर में भगवान के साकार माध्यम के रूप में प्रचार और प्रसार कर रही है, जबकि यह सर्वविदित है कि दादा लेखराज का तो सन् 1969 में ही देहावसान हो चुका है। फिर भला वो सारे विश्व के पिता अर्थात् प्रजापिता ब्रह्मा कैसे कहला सकते हैं? दादा लेखराज के मुख के द्वारा सुनाई गई ज्ञान मुरलियों में निराकार परमात्मा शिव ने गीता एवं गीता ज्ञानदाता के संबंध में निम्नलिखित महावाक्य उच्चारे हैं :

- यह है नई दुनिया के लिए नया ज्ञान। देने वाला एक ही बाप है। कृष्ण यह ज्ञान नहीं देता। कृष्ण को पतित-पावन नहीं कहा जाता। पतित-पावन तो एक ही परमापिता परमात्मा है, जो पुनर्जन्म रहित है और गीता में नाम डाल दिया है–कृष्ण का, जो पूरे 84 जन्म लेते हैं। (मु.28.10.87 पृ.2 आ.)

- श्रीकृष्ण को वृक्षपति नहीं कहेंगे। परमपिता परमात्मा ही मनुष्य सृष्टि का बीजरूप, क्रियेटर हैं। कृष्ण को क्रियेटर नहीं कहेंगे। वह तो सिर्फ दैवीगुण वाला मनुष्य है। (मु.22.2.88 पृ.1 म.)
- कृष्ण तो सबका फादर नहीं है। (मु.30.9.98 पृ.2 आ.)
- कृष्ण को सभी आत्माओं का बाप नहीं कहेंगे। आत्माओं का बाप परमपिता परमात्मा कहते हैं कि मामेकम् याद करो। (मु.13.9.88 पृ.3 अं.)

ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा प्रकाशित त्रिमूर्ति शिव के चित्र में दादा लेखराज को ब्रह्मा के रूप में चित्रित किया गया है, किंतु सन् 1969 में दादा लेखराज के निधन के पश्चात् कौन-सी मनुष्यात्माएँ शंकर तथा विष्णु की भूमिका अदा करेंगी, इसकी उन्हें जानकारी नहीं है, इसलिए शंकर तथा विष्णु के स्थान पर वही भक्तिमार्गीय चित्र दिखाए गए हैं। माउन्ट आबू से चलाई गई मुरलियों और अव्यक्तवाणियों के आधार पर आध्यात्मिक विद्यालय का मानना है कि सन् 1969 के बाद से निराकार परमात्मा शिव एक और साकार मनुष्य रथ शिव-शंकर भोलेनाथ के द्वारा सभी मनुष्यात्माओं को गीता का सच्चा ज्ञान दे रहे हैं तथा सहज राजयोग सिखा रहे हैं, जिससे हर अर्जुन रूपी आत्मा मनुष्य से देवता बन सके। इस बात के प्रमाण दादा लेखराज के द्वारा सुनाई गई अनेक ज्ञान मुरलियों में ही मौजूद हैं, जिन्हें ब्रह्माकुमारी संस्था के सरपरस्त, अपनी गद्दी खो जाने के डर से स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं।

ब्रह्माकुमारी संस्था तथा आध्यात्मिक विद्यालय का मानना है कि दादा लेखराज की आत्मा ही आने वाले सतयुग में श्रीकृष्ण के रूप में जन्म लेगी, किंतु ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा दादा लेखराज का गीता ज्ञानदाता शिव के माध्यम के रूप में प्रचार-प्रसार किया जाना, स्वयं उनके मुख द्वारा सुनाई गई ज्ञान मुरलियों को नकारने का कार्य है। दादा लेखराज तो केवल सन् 1951 से 1969 तक भगवान शिव के टेम्परारी मनुष्य रथ बने, जिस दौरान उन्होंने ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारियों को एक माँ का प्यार दिया और उनके द्वारा उच्चारे गए भगवान शिव के महावाक्य सच्ची गीता माता के रूप में ब्रह्माकुमार-कुमारियों के बीच प्रसिद्ध हुए, किंतु किंतु सन् 1951 से पहले तथा सन् 1969 में उनके निधन के पश्चात् इस बृहत ईश्वरीय कार्य का बीड़ा उनके पूर्व जन्म की भागीदार वाली आत्मा ने उठाया है, जो कि वर्तमान समय निराकार शिव के साकार माध्यम अर्थात् महादेव शिव-शंकर की भूमिका अदा कर रही है और भविष्य सतयुग में सत्यनारायण के रूप में अगले 1250 वर्ष बाद प्रारंभ होने वाले त्रेतायुग में श्री राम की भूमिका अदा करेगी।

भगवान शिव ने दादा लेखराज के द्वारा गीता का ज्ञान अर्थात् मुरली सुनाई ज़रूर थी, किंतु उसमें छिपे गूढ़ रहस्यों का उद्घाटन अपने वर्तमान मनुष्य रथ के द्वारा कर रहे हैं। जैसे आम हिन्दुओं द्वारा अज्ञानवश भोलेनाथ शिव-शंकर के स्थान पर आकर्षक श्रीकृष्ण को गीता ज्ञानदाता मान लिया गया है, उसी प्रकार ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा अज्ञानवश साधारण शंकर या राम वाली आत्मा के स्थान पर आकर्षक शरीर वाले धनाढ्य दादा लेखराज अर्थात् कृष्ण वाली आत्मा को गीता ज्ञानदाता मान लिया गया है। ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा प्रकाशित ज्ञान मुरलियों में भी शिवबाबा से पहले दादा लेखराज (पिताश्री) का नाम डाल दिया गया है। यही

वह एकज भूल है, जिसके कारण चतुर्युगी सृष्टि-चक्र में, द्वापरयुग से भक्तिमार्ग में संस्कृत की की गीता के रचयिता के रूप में शिव-शंकर के स्थान पर श्री कृष्ण का नाम डाल दिया गया है। गीता में भगवान के लिए दी गई अव्यक्त, अजन्मा, अभोक्ता आदि की संज्ञाएँ वास्तव में शिव-शंकर पर हद और बेहद में लागू होती हैं, न कि श्रीकृष्ण पर।

- बाप कहते हैं कि गीता का भगवान मैं हूँ। गीता माता रची शिवबाबा ने। जन्म लिया कृष्ण ने। उनके साथ राधे और सब आ जाते हैं। पहले हैं ही ब्राह्मण। बाप कहते हैं, कौन मूढ़मती हैं, हमारा नाम-निशान ही गुम कर दिया? फिर मुझे ही आकर बताना पड़ता है कि गीता का भगवान मैं शिव परमात्मा हूँ। मैंने गीता रची। गीता से कृष्ण बच्चा पैदा हुआ। तुमने फिर बाप के बदले बच्चे का नाम डाल दिया, यह है बड़ी भूल। (मु.13.12.88 पृ.2 अं.)
- रुद्र से कृष्ण बच्चा पैदा हुआ, तो उसमें बाप के बदले बच्चे का नाम डाल दिया। (मु.29.3.88 पृ.1 अं.)
- गीता है माई-बाप। गीता को माता कहा जाता है। और कोई पुस्तक को माता नहीं कहते। इनका नाम ही है–गीता माता। अच्छा, उनको किसने रचा? पहले-पहले पुरुष स्त्री को एडाप्ट करते हैं ना। (मु.28.9.88 पृ. आ.) (तो ज़रूर शिव भोलेनाथ ने यज्ञ के आदि में भी गीता के उपरान्त टाइटलधारी दादा लेखराज ब्रह्मा को ही 18 अध्यायी गीता माता के रूप में एडाप्ट किया)।
- सारा मदार गीता को करेक्ट कराने पर है। गीता खण्डन होने कारण भगवान की हस्ती गुम हो गई है। (मु.9.3.88 पृ.2 म.)
- एक ही श्रीमत भगवत गीता के भगवान से ही भारत को माखन मिलता है। श्रीमत भगवत गीता को भी खण्डन किया हुआ है, जो ज्ञानसागर पतित-पावन निराकार परमपिता परमात्मा के बदले श्रीकृष्ण का नाम डाल खण्डन कर छाछ बना दिया है। (मु.31.10.78 पृ.2 म.)
- गीता तो है सभी शास्त्रों की मात-पिता। ऐसे नहीं कि सिर्फ भारत के शास्त्रों की मात-पिता है। नहीं। जो भी बड़े ते बड़े शास्त्र दुनिया में हैं, सभी की मात-पिता है। (मु.5.2.83 पृ.1 म.)
- वह है स्वर्ग का रचयिता, सबका सहायक। ..... कृष्ण तो स्वयं रचना है। बगीचे का फर्स्टक्लास फूल है। (मु.5.2.83 पृ.1 म.)

यही वह एकज भूल है, जिसके कारण भारत देश की दुर्गति हुई है, गीता खण्डित हो गई है और सभी धर्मशास्त्रों की माता होने के बावजूद गीता को अन्य धर्मावलंबियों द्वारा स्वीकार नहीं किया जाता है। इसी कारण अलग-अलग विद्वानों द्वारा गीता की अलग-अलग व्याख्या की गई है। शंकराचार्य ने उसी गीता के आधार पर आत्मा और परमात्मा को एक (अद्वैत) सिद्ध किया, जबकि माध्वाचार्य ने आत्मा और परमात्मा को भिन्न (द्वैत) सिद्ध किया। गीता में काम विकार को महाशत्रु की संज्ञा दी गई है। दुनिया वाले इस बात को इसलिए स्वीकार नहीं करते; क्योंकि गीता के तथाकथित रचयिता श्री कृष्ण की आठ पत्नियाँ और 16,108 गोपियाँ शास्त्र में प्रसिद्ध हैं। यदि गीता ज्ञान दाता के रूप में महादेव शिव-शंकर शंकर का नाम आया होता तो संसार काम महाशत्रु वाली बात को सहज स्वीकार कर लेता;

क्योंकि शंकर तो एक पत्निव्रता या कामदेव को भस्म करने वाले के रूप में प्रसिद्ध है। शास्त्रों शास्त्रों का ही उदाहरण लें, तो जिस प्रकार सत्यनारायण की कथा में साधारण, बूढ़े मानव के रूप में आए भगवान को पहचाना नहीं जाता, उसी प्रकार शंकर के श्मशानवासी साधारण रूप को देखकर उनके ससुर दक्ष प्रजापति ने उन्हें नहीं पहचाना और उनका अपमान किया। तो यथा राजा तथा प्रजा।

भारत में गीता की मान्यता माता के रूप में भी है, किंतु भगवान शिव द्वारा वर्तमान समय दिए जा रहे ईश्वरीय ज्ञान में इस बात का भी स्पष्टीकरण दिया गया है कि गीता केवल ज्ञान का प्रतीक पुस्तक ही नहीं, अपितु एक चैतन्य मनुष्यात्मा का भी प्रतीक है, जो कि वर्तमान संगमयुग में ईश्वरीय परिवार की पालना करने के लिए प्रजापिता के साथ जगदंबा की भूमिका अदा कर रही है। इन्हें ही हिन्दू धर्म में आदिदेव-आदिदेवी, मुसलमानों में आदम-हव्वा, ईसाइयों में ऐडम-ईव तथा जैनियों में आदिनाथ-आदिनाथिनी के रूप में जाना जाता है।

अत: उपर्युक्त बातों को ध्यान में रखते हुए यदि बालक श्रीकृष्ण (दादा लेखराज) के स्थान पर पिता शिव-शंकर को गीता ज्ञानदाता के रूप में प्रस्तुत किया जाए, तो गीता को सारे विश्व की आत्माओं के द्वारा भगवान की वाणी के रूप में सहज स्वीकार कर लिया जाएगा।

भगवान ने गीता कब सुनाई? ज़रूर सभी धर्म होने चाहिए। सभी धर्मों के लिए वास्तव में एक गीता है मुख्य। सब धर्म वालों को मानना चाहिए। ..... सभी धर्मों की गीता द्वारा सद्गति करने बाप आया हुआ है। गीता बाप की उच्चारी हुई है। उसमें बाप के बदले बच्चे का नाम डाल मुश्किलात कर दी है। (मु.21.2.93 पृ.1 मध्यांत)

ओमशांति।